A.B.M. College, Golmuri, JSR

2nd year Inter 'A'
Hindi core
काव्य - खण्ड

ch = 07

पाठ का नाम ⇒ कैमरे में बंद अपाहिज
कवि का नाम ⇒ रघुवीर सहाय

Q. व्याख्या ⇒ हम दूरदर्शन पर बोलेंगे,
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएंगे,

हाँ तो बताइए आपका दुःख क्या है?
जल्दी बताइए, वह दुःख बताइए,
बता नहीं पाएगा।

Ans सन्दर्भ :- प्रस्तुत काव्य खण्ड हमारी पुस्तक "आरोह भाग - 2" में संकलित "कैमरे में बन्द अपाहिज" नामक कविता से अवतरित किया गया है। इस पाठ के रचयिता सुप्रसिद्ध कवि श्री रघुवीर सहाय हैं।

इस कविता में कवि ने मीडिया की संवेदनहीनता का चित्रण किया है। कवि का मानना है कि मीडिया वाले दूसरे के दुःख को भी व्यापार का माध्यम बना लेते हैं।

इस काव्यांश में कवि कहता है कि मीडिया के लोग अपाहिज से बेतुके सवाल

करते हैं। वे अपाहिज से पूछते हैं कि अपाहिज होकर आपको कैसा लगता है? यह बात सोचकर बताइए। यदि वह नहीं बता पाता तो वे स्वयं ही उत्तर देने की कोशिश करते हैं। वे इशारे करके बताते हैं कि क्या उन्हें ऐसा महसूस होता है। थोड़ा सोचकर और कोशिश करके बताइए। यदि आप इस समय नहीं बता पाएँगे तो सुनहरा अवसर खो देंगे। अपाहिज के पास इससे बढ़िया मौका नहीं हो सकता कि वह अपनी पीड़ा समाज के सामने रख सके। आप एक बड़े कमरे अर्थात स्टूडियो में एक कमजोर व्यक्ति को बुलाएँगे तथा उससे प्रश्न पूछेंगे। फिर उससे प्रश्न पूछा जाएगा कि आपको कष्ट क्या? अपने दुख को जल्दी बताइए। अपाहिज इन प्रश्नों का उत्तर नहीं देगा क्योंकि ये प्रश्न उसका मजाक उड़ाते हैं।

अतः हम पीड़ा को मुस्कुराते हुए सहेंगे। उस कार्यक्रम का अंत करते हुए दर्शकों की ओर मुखातिब होकर कहा कि आप सामाजिक उद्देश्य से संबंधित कार्यक्रम देख रहे हैं। बस अपाहिज को रुलाने में थोड़ी सी ही कमी रह गई है। कार्यक्रम की समाप्ति के साथ धन्यवाद।

Q. लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

Q.1 कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी गई हैं। आपकी समझ से इसका क्या औचित्य है।

Ans इस कविता में कवि ने मीडिया की ताकत के बारे में बताया है। मीडिया अपने कार्यक्रम के प्रचार व धन कमाने के लिए किसी की करुणा को भी बेच सकता है। वह ऐसे कार्यक्रमों का निर्माण समाज-सेवा के नाम पर करता है परंतु उसे इस कार्यव्यापार में न तो अपाहिजों से सहानुभूति होती है और न ही उनके मान-सम्मान की चिंता। वह सिर्फ अपने कार्यक्रम को रोचक बनाना जानता है। रोचक बनाने के लिए वह अट-पटांग प्रश्न पूछता है और पीड़ित की पीड़ा को बढ़ा-चढ़ाकर बताता है। दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले इस प्रकार के अधिकांश कार्यक्रम कारोबारी दबाव के कारण संवेदनशील होने का दिखावा करते हैं। इस तरह दिखावटी अपनेपन की भावना क्रूरता की सीमा तक पहुँच जाती है।

इस काव्यांश में खड़ी बोली का प्रयोग है प्रश्न-शैली से संचालकों की मानसिकता को प्रकट किया गया है। नाटकीयता है। मुक्तक छंद का प्रयोग है। कोष्ठकों का प्रयोग किया गया है।